एकात्म मानववाद एक प्रसंग

रंगनाथ त्रिपाठी

पश्चिम का अंधानुकरण ही विकास समझा जा रहा है। पश्चिम की भोगवादी संस्कृति यह मानती है कि मानव जीवन भोग के लिए ही हुआ है, और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रकृति का अनैतिक शोषण, मानव का अधिकार है। इसके विपरीत भारत की सनातन रचना अखंड मंडलाकार है, इसमें मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र और अंततः यह समस्त सृष्टि है। भारतीय संरचना में पहली इकाई से ही अंत तक की इकाइयां विकसित होती हैं और वृद्धि करती हैं, इनमें परस्पर कोई विरोध नहीं है।

पंडित जी ने इसी दर्शन को 'एकात्म मानववाद' कहा है। यह दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि पर्यावरण के प्रति जब हमारा दृष्टिकोण 'एकात्मक' का होगा, तो हम उसका संयमित उपयोग करते हुए उसके विकास का भी प्रबंध करेंगे।

हमारी संस्कृति में आज भी नदी को माता का सम्मान दिया जाता है, यह हमारी धर्म भीरुता नहीं, वरन उस की हमारे जीवन में उपयोगिता के कारण, उसके प्रति हमारे कर्तव्य को सुनिश्चित करने का, हमारे मनीषियों का दर्शन था। भारतीय संस्कृति में मानव और प्रकृति एक दूसरे के अभिन्न अंग है। हमारी तो दिनचर्या की शुरुआत ही चिड़ियों को दाना डालने, चीटियों को आटा खिलाने से होती है। भारत की पावन भूमि पर अनेकों महापुरुषों ने जन्म लिया, जिन्होंने समय समय पर हमारे देश की दशा और दिशा को प्रभावित किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत माता की वह अनमोल रत्न थे, जिसे बाल्यावस्था से ही कष्टों की अग्नि में दबाकर कुंदन किया। अत्यंत अल्प आयु में ही वह अपने माता पिता के स्नेह से वंचित रह गए। तत्पश्चात, आयु बढ़ने के साथ–साथ उनके आत्मीय जन भी उनको छोड़कर जाते रहे। इन सब घटनाओं का प्रभाव यह हुआ कि पंडित दीनदयाल जी ने आजीवन भारत माता की सेवा का व्रत धारण किया।

वह एक उत्कृष्ट विचारक, समाजसेवी, राजनीतिज्ञ और पत्रकार थे। पंडित जी की भारतीय संस्कृति में अटूट श्रद्धा थी। वर्षों की गुलामी के कारण आत्म विस्मृति भारतीय समाज के लिए पंडित जी का एकात्म मानववाद एक संजीवनी बूटी की तरह है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, उनके लेख उनकी उक्तियां आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, उनका अध्ययन गहन था, और उनकी आत्मा देशभक्त थी। वह भारतीय समाज की शक्तियों और उसकी व्यवस्थाओं से भली भांति परिचित थे। वह कहते थे कि, भारतीय संस्कृति समग्रता वादी है, संपूर्ण जीवन और सृष्टि को समेकित करना चाहिए, खंड खंड में विचार करने की विश्लेषणात्मक रीत पश्चिम की है।

आज जिसके फलस्वरुप जैविक विविधता का पोषण सहज ही हो जाता है। इसी विषय में पंडित दीनदयाल सिद्धांतों को धर्म के अनुरूप में माना जाता है, अर्थात जीवन के नियमों के रूप में पालन किया जाता है। भारतीय तीज त्यौहार भी प्रकृति से जुड़े हुए ही हैं। फसलों के काटने पर बनाए जाने वाले बैसाखी, पोंगल जैसे त्यौहार प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने का एक साधन है। अतः प्रकृ ति से एक आदमी भाव अनुभव का प्रयत्न करना होगा अन्यथा आज हम जिस प्राकृ तिक वातावरण को सहज और नैसर्गिक मान कर जी रहे हैं, भावी पीढ़ी के लिए वह मात्र पुस्तकीय विवरण ही बनकर रह जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, रामशक्लः2005, द्वितीय संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002
2. राठौर, कुसुम लताः2009, प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001
3. राय, पारस नाथः2007, द्वादशम् संस्करण, "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–282002
4. सक्सेना, एन0आर0स्वरूपः2002, ग्यारहवाँ संस्करण "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001
5. सक्सेना, एन0आर0स्वरूप व शिखा चतुर्वेदीः2007, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001